प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

आज की विफलताओं के बारे में मत सोचो, बल्कि उस सफलता के बारे में सोचो जो कल आ सकती है।
- हेलन केलर

अमेरिकी लेखिका

जीएसटी ने कर चुकाना ही आसान नहीं किया है, इससे टैक्स चोरी पर भी अंकुश लगा है। इससे जुड़ी कुछ अव्यावहारिकताएं खत्म हों, तो इसके और भी लाभ दिखेंगे।

जीएसटी के दो साल

वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी का अब तक का सफर भले ही मिला-जुला रहा हो, लेकिन इन दो वर्षों में जीएसटी के मजबूत होने के कारण इसके लाभ ही ज्यादा सामने आए हैं। इससे केंद्र और राज्यों के 17 अप्रत्यक्ष कर समाप्त हुए हैं; एक समान टैक्स होने के कारण कर चुकाना आसान हो गया है; ई-वे बिल ने टैक्स चोरी घटाने में मदद की है; करों की दर में कटौती के बावजूद अब राजस्व बढ़ रहा है; वाहनों के राज्यों की सीमाओं से तेजी से बाहर निकलने के कारण लॉजिस्टिक्स यानी संभार तंत्र की लागत घटी है; और कई राज्यों में फैले कारोबार में विभिन्न कर प्राधिकारियों के पास जाने की बाध्यता और उस लालफीताशाही को इसने खत्म कर दिया है। लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि 'एक देश-एक कर' के महत्वाकांक्षी लक्ष्य के तहत अप्रत्यक्ष कर के क्षेत्र में सबसे बड़े सुधार को लागू करने के तमाम उद्देश्य पूरे हो चुके हैं। दरअसल जीएसटी जैसे सुधार को व्यापकता में परखने के लिए दो साल की अवधि बहुत कम है। तब तो और भी, जब जीसटी की कई प्रक्रियागत जटिलताओं को दूर किया जाना अभी बाकी है। मसलन, कारोबारी जीएसटी के सरलीकृत रिटर्न की मांग करते आ रहे हैं, निर्यातकों तक रिफंड की त्वरित वापसी अभी तक संभव नहीं हो पाई है, तो टैक्स स्लैब को और कम कर दो या तीन में सीमित कर देने की मांग भी उठ रही है। बिजली, पेट्रोलियम उत्पाद और शराब को जीएसटी के दायरे में लाने की आवश्यकता तो खैर इसे लागू करने के समय से ही जताई जा रही है। जीएसटी के दो साल पूरे होने पर सरकार ने इसमें व्याप्त विसंगतियों को दूर करने की बात कही है। विवादों के तेजी से निपटारे के लिए राज्य मुख्यालयों और दूसरी जगहों पर जीएसटी अपीलीय ट्रिब्यूनल की स्थापना भी उतनी ही जरूरी है। अलबत्ता इन सबके बीच इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि इन दो वर्षों में केंद्रीय जीएसटी संग्रह उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहा है। राज्यों की बात अलग है, पांच साल तक उनके घाटे की भरपाई केंद्र करेगा, लेकिन जीएसटी संग्रह का दबाव केंद्र पर ज्यादा है। इन दो वर्षों में छह महीने ही ऐसे रहे, जब जीएसटी संग्रह एक लाख करोड़ रुपये से अधिक हुआ। लिहाजा जीएसटी की चोरी रोकने के लिए भी केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर कदम उठाने के बारे में गंभीरता से सोचना होगा।

ऐतिहासिक मुलाकात के मायने

ट्रंप और किम की मुलाकात का प्रतीकात्मक महत्व तो है ही, पर ट्रंप चाहेंगे कि उत्तर कोरिया के साथ रुकी हुई परमाणु वार्ता का समाधान निकल जाए, क्योंकि अगले वर्ष उन्हें चुनाव का सामना करना है।

योनेट जोसेफ

जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बीते शुक्रवार को उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन को दोनों कोरिया को बांटने वाले असैन्यीकृत क्षेत्र (डीएमजेड) में अनौपचारिक मुलाकात के लिए ट्वीटर निमंत्रण भेजा, तो दोनों नेताओं के पास पाने और खोने के लिए बहुत कुछ था। अगर किम मिलने के लिए नहीं आते, भले उनके पक्ष को साजिश दिख रही थी, तो ट्रंप को शर्मिंदा होना पड़ता और अपनी अप्रत्याशित कूटनीति के लिए उन्हें और आलोचनाएं सुननी पड़तीं। यह वियतनाम के हनोई में उनके शिखर सम्मेलन की नाटकीय विफलता से जुड़ जाता, जिसे ट्रंप ने अचानक बंद कर दिया था। लेकिन उत्तर कोरिया के नेता नियत समय पर पहुंच गए। इस ऐतिहासिक मुलाकात से कई बातें स्पष्ट हुईं।

दोनों की मुलाकात के दौरान कई बार अव्यवस्था दिखी। वीडियो फुटेज में पत्रकार और कैमरामैन इन दोनों नेताओं के आसपास चिल्लाते, सुरक्षा अधिकारियों के साथ नोक-झोंक करते और इस मुलाकात को कवर करने के लिए सही जगह बनाते हुए एक-दूसरे को कोहनी मारते हुए दिखे। जबकि उत्तर कोरिया के सुरक्षा बलों ने अमेरिकी पत्रकारों को धक्का दिया। पत्रकारों से मिली जानकारी और वीडियो फुटेज के अनुसार, व्हाइट हाउस की नई प्रेस सचिव स्टीफनी ग्रिशम को उस वक्त काफी मशक्कत करनी पड़ी, जब वह अमेरिकी टीवी के क्रू मेंबरों को फ्रीडम हाउस में प्रवेश दिलाना चाह रही थीं। असैन्यीकृत इलाके में अप्रत्याशित भेंट और उसकी सुरक्षा व्यवस्था को अतिरंजित नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उस समय किम के सुरक्षाकर्मी अपने नेता को पूरी तरह से सुरक्षा देने के लिए तनावग्रस्त दिख रहे थे। वे पश्चिमी पत्रकारों, कैमरामैनों और अमेरिका, उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के लोगों से घबराए हुए लग रहे थे। ट्रंप के अप्रत्याशित आमंत्रण ने उनके कूटनीतिक सहयोगियों को भी हैरान कर दिया, क्योंकि उस समय ट्रंप जापान के ओसाका में जी-20 शिखर सम्मेलन में थे। विशेषज्ञों का मानना है कि ट्रंप के इस आमंत्रण का अगर तत्काल ठोस लाभ न हो, तो भी इसका प्रतीकात्मक महत्व है। एक ट्वीट हाथ मिलाने और बीस कदम चलने की ऐतिहासिक घटना के तौर पर परिणत हो गया। ट्रंप अमेरिका के पहले राष्ट्रपति बन गए, जिन्होंने उत्तर कोरिया की सीमा में अपने कदम रखे। इस दौरान उन्होंने कई बार किम की पीठ थपथपाई और इसे 'बड़ा अवसर -बड़ा अवसर' कहा। असैन्यीकृत क्षेत्र में दुभाषिये के माध्यम से किम ने ट्रंप को कहा, 'आपसे फिर से मिलना अच्छा है। मैंने कभी यह उम्मीद नहीं की थी कि आपसे यहां मुलाकात होगी।' अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों की खातिर तस्वीरों के लिए पोज देने के बाद दोनों नेता दक्षिण कोरिया की विपरीत दिशा में चले गए और फ्रीडम हाउस में लगभग एक घंटे तक द्विपक्षीय वार्ता की। अंत में ट्रंप ने कहा कि उत्तर कोरिया की परमाणु महत्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाने के लिए लंबे समय से टलते आ रहे समझौते के लिए आखिरकार दोनों अपने वार्ताकारों को वार्ता की मेज पर भेजने के लिए सहमत हुए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह किम को व्हाइट हाउस आने के लिए आमंत्रित करेंगे।

मुलाकात के दौरान की वीडियो फुटेज ने सीमा की रंगीन झलक दिखाई, जिसे कभी-कभी पिछले शीतयुद्ध का सीमांत कहा जाता है। दर्शकों ने लोगों को मोटी पीले रंग की रस्सी पकड़े हुए देखा, जो शायद पत्रकारों को रोकने के लिए लगाई गई थी। वहां नीले हट्स भी थे। ढाई मील चौड़े असैन्यीकृत इलाके की, जो दशकों से उत्तर और दक्षिण कोरिया को अलग करता है, निगरानी अमेरिकी नेतृत्व वाले संयुक्त राष्ट्र कमान और उत्तर कोरिया द्वारा संयुक्त रूप से की जाती है। सीमांकन रेखा पर बने इन हट्स को संयुक्त राष्ट्र के नीले रंग में रंगा गया है।

कैमरे ने पंमुजोम के युद्धविराम गांव के बैरियरों और सीमाओं को निकट से दर्शाया-जो दक्षिण कोरिया की राजधानी सिओल से 32 मील और उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग से 91 मील दूर स्थित है। यहीं पर अधिकारियों ने 1953 में तीन वर्ष से चल रहे युद्ध को रोकने के लिए युद्धविराम संधि पर हस्ताक्षर किए थे। यह क्षेत्र खानों और कांटेदार तारों से अटा पड़ा है, हालांकि मुलाकात के दिन (रविवार) वे नहीं दिखाई पड़ रहे थे। दूसरी ओर युद्ध के लिए तैयार सैनिक घातक हथियारों से अभ्यास करते हैं। लेकिन रविवार को वहां पत्रकारों की भारी भीड़ जमा थी। हालांकि जब ट्रंप उत्तर कोरिया में प्रवेश के लिए बैरियर पार कर रहे थे, तो यह कम भयावह लग रहा था। लेकिन दर्शकों ने हताहत होने के डर से सीमा पार करने का दुस्साहस नहीं किया।

दोनों नेताओं ने पुराने दोस्तों की तरह एक-दूसरे को प्रशंसा करते हुए बधाई दी। अमेरिकी राष्ट्रपति ने किम की सराहना की, जिन्हें विशेषज्ञ क्रूर, चंचल तानाशाह कहते हैं और जिन्हें अपने परिवार के लोगों का हत्यारा कहा जाता है। किम ने पत्रकारों को बताया कि 'इस मुलाकात का मतलब है कि हम एक अप्रिय अतीत को खत्म करना चाहते हैं और नए भविष्य की रचना की कोशिश कर रहे हैं, इसलिए यह बहुत ही साहसिक और दृढ़ कार्य है।' बाद में फ्रीडम हाउस में उन्होंने ट्रंप से कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आपके और हमारे बीच उत्कृष्ट व्यक्तिगत संबंधों के बिना ऐसी अप्रत्याशित बैठक हो पाती।' उधर ट्रंप ने कहा कि 'अगर आप नहीं आते, तो मीडिया मेरी खिल्ली उड़ाता, इसलिए आपने हम दोनों के लिए अच्छा काम किया और मैं इसकी सराहना करता हूं।'

भले ही सुलह के लिहाज से यह प्रतीकात्मक मुलाकात हुई, पर ट्रंप चाहेंगे कि उत्तर कोरिया के साथ रुकी हुई परमाणु वार्ता का समाधान निकल जाए, क्योंकि अगले वर्ष उन्हें चुनाव का सामना करना है। उन्हें निश्चित रूप से उम्मीद है कि इससे उन्हें प्रचार अभियान में मदद मिलेगी। लेकिन अमेरिकी खुफिया एजेंसियां और विश्लेषक कहते हैं कि उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियार शायद ही छोड़े। किम ने हाल ही में मिसाइलों और प्रक्षेपास्त्र लांच कर अंतरराष्ट्रीय संकट को बढ़ावा दिया है तथा और परमाणु हथियारों के परीक्षण की धमकी दी है। बेशक ट्रंप ने किम की काफी प्रशंसा की, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि यह मुलाकात और भी ऐतिहासिक होती, अगर इसका कुछ नतीजा निकलकर सामने आता।

© The New York Times 2019

अंतर्ध्वनि

>> आसाराम लोमटे

शोषितों-वंचितों की दबाई गई आकांक्षाएं मुझे बेचैन करती हैं

हम आज एक ऐसे समय में जी रहे हैं, जहां आसपास का माहौल शोरगुल और कोलाहल से प्रभावित हो गया है। ऐसा लगता है कि हम निरंतर एक चहल-पहल वाले बाजार में खड़े हैं। अपनी पहचान आदमी के रूप में नहीं, बल्कि ग्राहक के रूप में ही प्रभावी रूप में सामने आ रही है। हर रोज नए-नए उत्पादनों के विज्ञापनों की बाढ़ आ रही है। ऐसे समय में लगता है कि लिखने वालों का दायित्व बढ़ गया है। परेशान करने वाला, बेचैनी को बढ़ानेवाला और आत्ममग्न स्निग्धता को पिघलानेवाला लेखन करना वर्तमान समय की जरूरत है, ऐसा मैं सोचता हूं। देखा है कि पैरों में कांटा चुभने पर होने वाली पीड़ा को दूर करने के लिए उस जगह पर मोम लगाकर आग से दागा जाता है। लिखने को मैं इसी तरह की दागने की बात मानता हूं। मैं जो कहानियां लिखता हूं, उसमें हवा पर झूमने वाले हरे-भरे खेत नहीं होते। कलकल बहने वाला पानी नहीं होता। मैं जिस गांव को देखता हूं, वह रमणीय नहीं है। मैं इस गांव के लोगों को जीते हुए बेहद ठोकरें खाता हुआ देखता हूं। खास बात तो यह है कि सतह से नीचे के आदमी के पास अपनी जुबान ही नहीं है। मैं जिस गांव को देखता हूं उसमें दरारें पड़ी हुई हैं। आज जो शोषित और वंचित हैं, उसके जीने के प्रश्न दिन-ब-दिन डरावने होते जा रहे हैं। जीने के लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। इन लोगों की दबाई गई आशाएं-आकांक्षाएं, उनके बुझे हुए सपने, उनके रोजाना की जिंदगी के तनाव मुझे बेचैन करते हैं और इन सब शोषितों का जीना मेरी कहानियों में बार-बार आता है। इस जिंदगी की सारी आहें, हसरतें और हुंकार लिपिबद्ध नहीं हुई हैं। ऐसी जिंदगियों की अनाम कहानियों को रेत पर खींची रेखाओं की तरह नष्ट नहीं होने देना है। जब तक इन लोगों के जीने की कशमकश जारी है, तब तक 'कहानी' जिंदा रहने वाली है।

-मराठी के चर्चित कथाकार

मंजिलें और भी हैं

>> अभिषेक वर्मा

नाले के पानी से बना दी उपयोगी बायोगैस

मैं कानपुर का रहने वाला हूं। बचपन से ही मुझे विज्ञान में रूचि थी। अक्सर मैं बिजली के यंत्रो को खोलकर, उसके काम करने के तरीके को समझने की कोशिश करता था। मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए मैं गाजियाबाद आया, तो यहां मेरे हॉस्टल के बगल में एक बड़ा और खुला सीवर बहता था, जिसे सूर्यनगर नाले के नाम से जानते हैं। सभी छात्र नाले की बदबू के कारण परेशान रहते थे और अक्सर शिकायतें करते थे।

एक दिन मैंने नाले के गंदे पानी से झाग और गैस के बुलबुले निकलते देखा, तो मुझे सीवर के भीतर होने वाले कार्बनिक कचरे के अपघटन की प्रक्रिया के बारे में याद आया। हमने झाग और बुलबुले का सैंपल इकट्ठा किया और आईआईटी, दिल्ली में परीक्षण के लिए भेज दिया। जब लैब ने इस सैंपल पर गैस क्रोमोटोग्राफी टेस्ट किया, तब पता चला कि नाली से निकलने वाली इस गैस की संरचना गोबर गैस या बायो-गैस से मिलती जुलती है और इसमें 65 प्रतिशत मीथेन होने के कारण यह ज्वलनशील भी है। मेरे दिमाग में तुरंत यह विचार आया कि कैसे एक ऐसा सिस्टम तैयार करें, जिससे इस गैस के प्रभाव को कम किए बिना, इसे निकालकर रोजमर्रा के कामों में इस्तेमाल किया जा सके।

मेरा लक्ष्य एक ऐसा सिस्टम विकसित करना था, जिसे लगाना और रखना आसान हो।

फिर हमने इस प्रोटोटाइप पर काम करना शुरू कर दिया। सारे शोध हो जाने के बाद, जून 2014 में हमने पहली बार एक टी-स्टॉल पर अपने इस आविष्कार का प्रदर्शन किया। हमने छह ड्रम का एक सेट लिया। इनको एक अलग केस में रखा और फिर लोहे के बैरिकेड से जोड़कर खुले नाले में डुबो दिया। इससे ड्रमों के अंदर गैस इकट्ठा होने लगी और जैसे-जैसे गैस का दबाव बढ़ा, इससे ड्रम ऊपर की ओर उठने लगे। इस गैस को लोहे की पाइपों की मदद से निकाला गया, जो कि स्टोव से जुड़े हुए थे। एक वाल्व की मदद से गैस को आवश्यकता अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं। स्थानीय मीडिया ने इसे 'गटर गैस' का नाम देकर इसकी काफी प्रशंसा की। इस छह यूनिट सिस्टम की लागत केवल पांच हजार रुपये थी और इससे एक बार में दो सौ लीटर गैस निकाली जा सकती थी। एक ओर कुछ ग्राहक जहां गटर गैस के प्रयोग को लेकर संशय में थे, वहीं दूसरी ओर चाय के स्वाद और गुणवत्ता में कोई कमी न आने से चाय कारोबारी का व्यवसाय बढ़ता गया। कचरे से निकलती यह गैस बिलकुल मुफ्त थी, इसलिए चायवाले की लागत अब कम हो रही थी और आय ज्यादा। इस परियोजना का प्रदर्शन हमने गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के सामने भी किया, पर उन्होने इस प्रस्ताव को यह कहकर स्वीकृति नहीं दी कि यह प्रणाली असुरक्षित है और दुर्घटना का कारण बन सकती है। पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने इस सिस्टम को बाजार में बेचने के लिए 'पीएवी इंजीनियर' नामक एक एलएलपी फर्म की स्थापना की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विज्ञान भवन, दिल्ली में 'वर्ल्ड बायोफ्यूल डे' पर अपने भाषण में मेरे मॉडल का उल्लेख किया। इसके बाद पूरे देश के लोग इसे अपनाने के लिए आगे आने लगे। मेरा लक्ष्य एक ऐसा सिस्टम विकसित करना था, जिसे लगाना और रखना आसान हो। मैं चाहता था कि इसमें निवेश भी बहुत ज्यादा न हो। अब मौजूदा सिस्टम की जांच के बाद गाजियाबाद विकास प्राधिकरण भी इसको आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। देश भर में मेरे जैसे अनेक युवा हैं, जो नया काम करना चाहते हैं, पर उनके पास ऐसा कोई मंच नहीं है, जहां वे अपनी प्रतिभा दिखा सकें। ऐसे लोगों के लिए मैं एक मंच तैयार करना चाहता हूं, जहां वे अपनी तकनीक को उन लोगों तक पहुंचा पाएं, जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

जम्मू-कश्मीर : परिसीमन जरूरी

वर्ष 2001 से 2011 के बीच, कश्मीर की आबादी में तेरह लाख से अधिक की बढ़ोतरी दिखाई गई, जबकि तमाम कारण बताते हैं कि उस दौरान आबादी घटी। इस पृष्ठभूमि में सूबे में परिसीमन की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता।

भीम सिंह

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ मीडिया एजेंसियां जम्मू-कश्मीर के मामले में गुमराह करने का काम कर रही हैं। विगत 21 जून को एक एजेंसी ने श्रीनगर से भ्रामक व मनगढ़ंत वक्तव्य जारी किया, जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसने कहा कि जम्मू-कश्मीर के कानून विभाग से परिसीमन करवाने का निर्णय राज्य विधानसभा चुनाव से पहले रोका जाए, जो कि एक साजिश भरी कहानी है। इस प्रायोजित कहानी की राज्य के तीन क्षेत्रों के बीच विधानसभा सीटों के वितरण के बारे में भी गलत धारणा है। तथ्य यह है कि विधानसभा सीटें आबादी और क्षेत्र के साथ-साथ इलाके के अनुसार वितरित की जाती हैं। वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में कुल 87 सीटें हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, लद्दाख में चार विधानसभा सीटें हैं, जिनकी जनसंख्या 2,74,289 है।

दिलचस्प बात यह है कि वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कश्मीर क्षेत्र की जनसंख्या 68,88,475 और जम्मू की आबादी 53,78,538 बताई गई है। जबकि वर्ष 2001 की जनगणना में कश्मीर क्षेत्र की जनसंख्या 55,14,092 और जम्मू की 44,30,191 थी। दस साल में कश्मीर घाटी की आबादी में 13,74,383 की बढ़ोतरी अपने आप में बेहद आश्चर्यजनक है और इससे सवाल खड़े होते हैं कि आखिर यह कैसे संभव है। वास्तविकता यह है कि दस साल की उस अवधि में तमाम कारण घाटी की आबादी में गिरावट आने की ही बात करते हैं। उदाहरण के लिए, वर्ष 1990-91 में लगभग पांच लाख कश्मीरी पंडित आतंकवादी हिंसा और उन्हें निशाना बनाए जाने के कारण दहशत में घाटी छोड़कर चले गए। इसके अलावा अनेक गैर-पंडित यानी हिंदू और मुसलमान जम्मू और घाटी से पलायन कर गए, क्योंकि बीती सदी के नब्बे के दशक में आतंकवाद चरम पर था। यह भी तथ्य है कि इस दौरान लगभग पंद्रह लाख मुस्लिम कश्मीर छोड़कर देश के दूसरे क्षेत्रों में चले गए। जाहिर है, कश्मीर घाटी की जनसंख्या कम हो गई थी, जिसे 2011 की जनगणना में दर्ज किया जाना चाहिए था। जम्मू-कश्मीर की तत्कालीन सरकार ने धोखाधड़ी की और फर्जी रिकॉर्ड बनाने के लिए प्रशासन का उपयोग किया। उस दौरान कई हजारों युवाओं ने अवैध रूप से कश्मीर से पाकिस्तान पलायन किया था, जो रिकॉर्ड में है और जिसे छिपाया नहीं जा सकता था। यही कारण है कि कश्मीर के कुछ पूर्व शासकों ने राष्ट्रीय नेतृत्व भाजपा के साथ एक फर्जी गठबंधन किया, जिसके कारण कश्मीर घाटी से लोकसभा की तीन अन्य सीटों को छोड़कर सभी तीन सीटें- जम्मू प्रांत से दो और लद्दाख से एक सीट पर सत्तारूढ़ भाजपा जीती है। यह एक साजिश है, जिसका राष्ट्रीय हित में पता लगाना चाहिए था। जो लोग भारतीय राष्ट्रवाद, कानून और धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र के शासन में विश्वास करते हैं, उन्हें तो खासकर जम्मू-कश्मीर की इस सच्चाई के बारे में जानना चाहिए।

जाहिर है, सूबे में परिसीमन की तत्काल आवश्यकता है, जो 1995 के बाद से हुआ ही नहीं है। 25 साल हो गए हैं तथा परिसीमन 10 साल या उससे अधिक के लिए लटकाने का कोई कारण नहीं है। राष्ट्रीय एकता के लिए सभी सार्वभौमिक कानूनों व नियमों को जम्मू-कश्मीर में भी लागू करने की तत्काल आवश्यकता है, जो देश के सभी राज्यों में लागू होते हैं। देश के सभी राज्यों पर लागू मौलिक अधिकार जम्मू-कश्मीर में रहने वाले सभी भारतीय नागरिकों पर भी लागू हों। इसलिए जम्मू-कश्मीर में रहने वाले प्रत्येक भारतीय नागरिक को सभी मौलिक अधिकारों के साथ एक संविधान और एक ध्वज लागू करना समय की जरूरत है।

हरियाली और रास्ता

राजा, राजकुमारी और बाजार

एक राजकुमारी की कथा, जिसे उसके पिता ने जिंदगी की सबसे बड़ी सीख दी।

एक राजा था, जो अपनी प्रजा से बहुत मोहब्बत करता था। उसकी दस साल की बेटी थी, जिसका नाम प्रज्ञा था। एक दिन राजा अपनी बेटी से बोला, आज मैं तुम्हें जिंदगी की सबसे बड़ी सीख देने जा रहा हूं। क्या तुम तैयार हो? प्रज्ञा खुशी-खुशी राजी हो गई। राजा ने एक शर्त रखी कि वह किसी को नहीं बताएगी कि वह कौन है। राजा ने प्रज्ञा को तैयार होने के लिए भेज दिया। रानी प्रज्ञा को सुंदर आभूषण, जवाहरात और बेशकीमती कपड़े पहनाकर तैयार करके ले आई। प्रज्ञा को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सिपाहियों से कहा, अब इसे नगर के बीच बाजार में जाकर छोड़ आओ। सिपाहियों ने प्रज्ञा को बाजार में छोड़ दिया। प्रज्ञा को बाजार के बीच खड़े देख हर कोई उसकी तरफ आकर्षित हुआ। कुछ व्यापारियों ने छोटी लड़की को अकेले देख चिंता जताई, तो कुछ ने उसकी खातिरदारी की। इससे प्रज्ञा बहुत खुश हुई। अगले दिन राजा ने एक गरीब परिवार को प्रज्ञा को तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। प्रज्ञा को फटे-पुराने कपड़े पहनाए गए, और सारे आभूषण हटा दिए गए। पिछड़े इलाकों से गुजरने के कारण उसका चेहरा और बाल भी धूल से भर गया। प्रज्ञा को फिर बाजार में छोड़ दिया गया। पर इस बार प्रज्ञा की तरफ किसी ने नहीं देखा। जिन लोगों ने पहले उसकी खातिरदारी की थी, इस बार उन्होंने उसे दुत्कार दिया। कुछ ने तो उसे धक्का देकर भगा दिया। प्रज्ञा रोते-रोते वापस राजा के पास लौटी और उन्हें उसने पूरी कहानी सुनाई। राजा बोले, बेटी, मुझे माफ कर दो। मैं तुम्हें सिर्फ यह सिखाना चाह रहा था कि किसी को उसकी वेशभूषा से कभी आंकना नहीं चाहिए। हम चाहे जितने भी बड़े क्यों न हों, हमें सबको समान भाव से देखना चाहिए और सबका आदर करना चाहिए।

कोई कैसा दिखता है, इससे यह तय नहीं होता कि वह कैसा है।

खुली खिड़की

मनोचिकित्सकों की संख्या

दुनिया भर में कई बीमारियों की तरह मनोरोगियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। ऐसे में मनोचिकित्सकों की जरूरत बढ़ रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, प्रति लाख आबादी पर सबसे ज्यादा मनोचिकित्सक नीदरलैंड्स में मौजूद हैं।

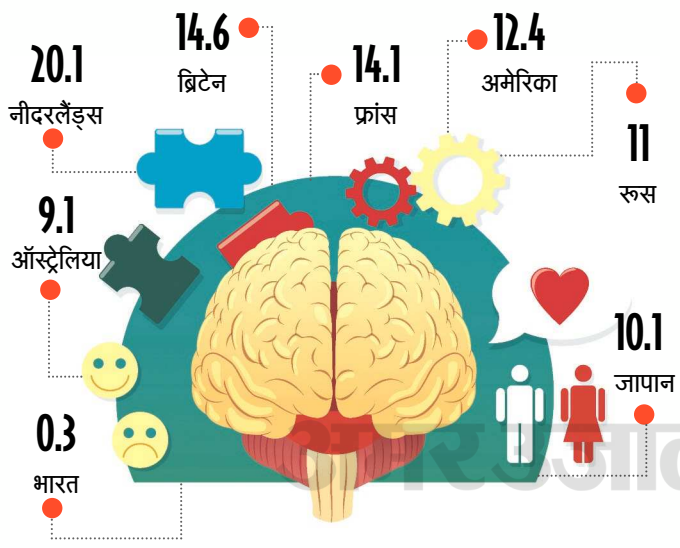

स्रोत : विश्व स्वास्थ्य संगठन

अनूठा धैर्य

सुकरात के घर सुबह से शाम तक सत्संग के लिए आने वालों का तांता लगा रहता था। उनके साथी उनसे विचार-विमर्श के लिए आते थे, तो शिष्य और युवा मार्गदर्शन के लिए उनके घर पर पहुंचते थे। सुकरात की पत्नी कर्कश स्वभाव की थी। वह सोचती थी कि निठल्ले लोग बेकार ही उसके घर पर अड्डा जमाए बैठे रहते हैं। वह समय-समय पर घर आए लोगों के साथ रूखा व्यवहार करती, ताकि वे दोबारा न आएं। पत्नी के इस व्यवहार से सुकरात को बहुत दुख होता था। एक दिन सुकरात लोगों के साथ बैठे हुए सत्संग कर रहे थे कि पत्नी ने उनके ऊपर छत से गंदा पानी उलीच दिया। इतना ही नहीं, वह उन्हें निठल्ला कहकर चीखने-चिल्लाने लगी। सत्संगियों को यह अपना अपमान लगा। सुकरात को भी यह व्यवहार बुरा लगा, परंतु उन्होंने बहुत धैर्य के साथ उपस्थित लोगों से कहा, आप सभी ने यह मुहावरा सुना होगा कि जो गरजता है, वह बरसता नहीं। लेकिन आज तो मेरी पत्नी ने गरजना-बरसना साथ-साथ कर उपरोक्त कहावत को ही झुठला दिया है। सुकरात के विनोद भरे ये शब्द सुनते ही वहां बैठे सत्संगियों का क्रोध अचानक शांत हो गया और वे दोबारा सत्संग में लिप्त हो गए। सुकरात का धैर्य और सहनशीलता देखकर उनकी पत्नी भी चकित रह गई। उसी दिन से उसने अपना स्वभाव बदल दिया और बजाय चीखने-चिल्लाने के आने वाले लोगों का सत्कार करने लगी।

सत्संग

-संकलित